इकाई 4 : छत्तीसगढ़ :– परिवेश, कला–संस्कृति एवं व्यक्तित्व

पाठ :– 4.1 अमर शहीद वीरनारायण सिंह

पाठ :– 4.2 गृह प्रवेश

पाठ :– 4.3 छत्तीसगढ़ की लोककलाएँ

इ
का
ई

4 छत्तीसगढ़ :– परिवेश, कला–संस्कृति एवं व्यक्तित्व

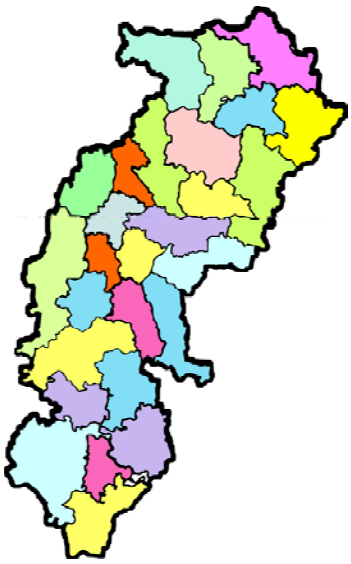

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता उसे भारत के कई राज्यों की तरह एक बहुरंगी स्वरूप देती है। आप छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं में यहाँ की संस्कृति के विविध आयामों के दर्शन कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ के सपूतों ने कई क्षेत्रों में इसके गौरव को बढ़ाया है। उन सपूतों की गौरव गाथाओं का गान हमारी परंपराओं में है।

इस इकाई की रचना का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक कलाओं की चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध विकसित करना और यहाँ के गौरवशाली व्यक्तित्व तथा उनके कृतित्व से उन्हें परिचित कराना है।

इस इकाई में शामिल पाठ वीर नारायण सिंह, छत्तीसगढ़ के आदिवासी स्वातंत्र्य सेनानी शहीद वीरनारायण सिंह के समाज के शोषकों एवं तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध वीरतापूर्ण संघर्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराता है।

'कविता', 'गृह–प्रवेश' हमारे परिवेश में व्यक्ति के एकाकीपन को महसूस करने की संवेदना विद्यार्थियों में जगाती है, और बताती है कि घर को एक 'गृहिणी' सचमुच 'घर' बना देती है। कविता के अंत में चिड़िया का वापस न जाने के लिए अंतःपुर में आ जाना घर को एक गृहिणी मिल जाने का प्रतीक है।

इस इकाई में शामिल पाठ 'छत्तीसगढ़ की लोककला' में लोककलाओं की विशिष्टताओं को रेखांकित कर छत्तीसगढ़ के लोकगीतों, लोकनाट्यों एवं लोकनृत्यों तथा उनसे जुड़े कलाकारों से परिचित कराया गया है।

पाठ – 4.1

अमर शहीद वीरनारायण सिंह

F5ZSDG

डॉ. सुनीत मिश्र

जीवन परिचय

डॉ. श्रीमती सुनीत मिश्र का जन्म 16 अक्टूबर, 1949 को मंडला, मध्यप्रदेश में हुआ। इन्होंने एम.ए., पी.एच. डी. (इतिहास) एवं पर्यटन में स्नातकोत्तर पत्रोपाधि प्राप्त की है। सोनाखान के वीर जमींदार शहीद वीरनारायण सिंह पर इनका प्रथम शोधकार्य है। इनके शोधपत्र, लेख विचारादि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इन्हें शिक्षा एवं महिला उत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल एवं महिला आयोग, छत्तीसगढ़ शासन, के द्वारा राज्यपाल के हाथों सम्मानित किया गया है।

अतीत से ही छत्तीसगढ़ देश का एक गौरवशाली भू–भाग रहा है। यहाँ पर सर्वधर्म समभाव की भावना है, ऋषि–मुनियों एवं वीर योद्धाओं ने इस अचंल का नाम देश में रोशन किया है। यह क्षेत्र राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस अंचल में अनेक महान् विभूतियों ने जन्म लिया तथा यहाँ की माटी को गौरवान्वित किया।

महानदी की घाटी एवं छत्तीसगढ़ की माटी के महान् सपूत सोनाखान के जमींदार वीर नारायण सिंह बिंझवार का जन्म 1795 में हुआ था। इनके पिता रामराय सोनाखान के जमींदार थे, रामराय ने ब्रिटिश संरक्षण काल के आरंभ होते ही 1818–19 में अंग्रेजों एवं भोंसला राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था जिसे नागपुर से आकर कैप्टन मैक्सन ने दबा दिया था। विद्रोह का दमन होने के बाद सोनाखान जमींदारी के गाँवों की संख्या 300 से घटकर 50 तक सीमित हो गई। इसके बाद भी रामराय का दबदबा समाप्त नहीं हुआ और बिंझवारों की तलवार का जादू सिर चढ़कर बोलता रहा। 1830 ई. में रामराय की मृत्यु के पश्चात् नारायण सिंह 35 वर्ष की अवस्था में जमींदार बने।

नारायण सिंह धर्म परायण थे,रामायण महाभारत में उनकी रुचि थी। गुरुओं से धर्म संबंधी, नीति संबंधी शिक्षा लेते थे। बाल्यकाल से ही तीर धनुष और बंदूक चलाना सीख चुके थे। मृदुभाषी, मिलनसार एवं परोपकारी प्रवृत्ति के कारण वे जनसंपर्क में विश्वास रखते थे और लोकोत्सव आदि में सम्मिलित होते थे। वे अपने कबरे घोड़े पर सवार होकर गाँव–गाँव भ्रमण कर जन समस्याएँ सुनते थे। उन्होंने तालाब खुदवाना, वृक्ष लगवाना एवं पंचायतों के माध्यम से जन समस्याओं का समाधान करना, जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। सोनाखान में राजा सागर, रानी सागर

और नंद सागर तीन तालाब हैं जो वीर नारायण सिंह की सच्ची लोक कल्याणकारी नीतियों के साक्षी हैं। उन्होंने स्वयं नंद सागर के आस–पास वृक्षारोपण कर नंदनवन का रूप दिया था। उनके पिता ने जीते जी जो परंपराएँ शुरू की थीं उन्होंने तथा उनके पुत्र गोविंद सिंह ने उनका पालन किया।

अन्याय और शोषण के विरोधी वीर नारायण सिंह अल्पायु से ही अपने पिता के संघर्षों में भी साथ रहते थे। उनमें अपने पूर्वज बिसई ठाकुर जैसी दृढ़ता, फत्ते नारायण सिंह जैसा धैर्य एवं साहस तथा पिता रामराय जैसा जन–नेतृत्व करने की अपूर्व क्षमता थी जो अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में देखने को मिली। जमींदार बनते ही उनके सभी जनप्रिय गुणों का साक्षात्कार होने लगा। अपनी जमीदारी सँभालने के बाद उन्होंने प्रजा के दुख–दर्द को समझा और उसे दूर करने के लिए अनेक उपाय किए।

जमींदार होने के बाद भी नारायण सिंह बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। उनका मकान बड़ी हवेली या किला नहीं था बल्कि बाँस और मिट्टी से बना साधारण मकान था। वे आम जनता के बीच समरस होकर ही अपने क्षेत्र का दौरा करते थे और रैयत की समस्याओं एवं कठिनाइयों का हल खोजते थे।

1854 के प्रारंभ में नागपुर राज्य के साथ छत्तीसगढ़ क्षेत्र भी अँग्रेजी राज्य में मिला लिया गया । कैप्टन इलियट ने इस अंचल का दौरा करके सरकार को रिपोर्ट भेजी। नए ढंग से टकोली (लगान) नियत किया जिसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई। नारायण सिंह ने भी अँग्रेजों की इस नई नीति का विरोध किया।

1835 से 1855 के मध्य सोनाखान जमींदारी में अनेक समस्याएँ आती रहीं किंतु नारायण सिंह ने उनका दृढ़ता पूर्वक सामना किया। वे अपने ग्रामों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहे। इस अवधि में अँग्रेज अपनी देशव्यापी समस्याओं में व्यस्त थे। अफगान, सिंध, मिस्र, बर्मा आदि ज्वलंत प्रश्न थे। नागपुर में रघुजी तृतीय का शासन चल रहा था। राजा अस्वस्थता के कारण छत्तीसगढ़ आकर प्रशासन देखने की स्थिति में नहीं था, यद्यपि सोनाखान जमींदारी की जागरुकता से वह सतर्क था। नारायण सिंह ने इन परिस्थितियों से लाभ उठाते हुए अपने अधीनस्थ जमींदारी क्षेत्र में सुशासन स्थापित करने का प्रयास किया।

सोनाखान जमींदारी से टकोली की अदायगी न होने के कारण रायपुर में डिप्टी कमिश्नर सी. इलियट, नारायण सिंह के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त था। वह उन्हें दंडित करने की प्रतीक्षा में था। इसके लिए वह सूक्ष्म कारणों को भी खोजने में सक्रिय था। उसने नागपुर के कमिश्नर को शिकायत की कि मेरी दृष्टि में जमींदार का व्यवहार असहनीय एवं अत्याचार पूर्ण है। ऐसे समय में ही उसे खालसा के व्यापारी माखन के गोदाम से जमींदार द्वारा अनाज निकाले जाने की सूचना प्राप्त हुई। अतः डिप्टी कमिश्नर ने नारायण सिंह को बुलवाया परन्तु आदेश की अवहेलना होने पर उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया। हुआ यह था कि सन् 1856 में छत्तीसगढ़ में सूखा पड़ा जिसमें नारायण सिंह की जमींदारी के लोग दाने–दाने के लिए तरसने लगे। खालसा गाँव के माखन नामक व्यापारी के पास अन्न के विशाल भंडार थे। नारायण सिंह को यह असह्य था कि जनता भूखों मरती रहे और व्यापारी भंडारों में अनाज जमा करते रहें। अतः नारायण सिंह ने भंडारों के ताले तोड़ दिए और उसमें से उतना अनाज निकाल लिया जो भूख के शिकार किसानों के लिए आवश्यक था और उन्होंने जो कुछ भंडार से निकाला था उसके विषय में तुरंत ही डिप्टी कमिश्नर को लिख दिया परन्तु अंग्रेजों ने षडयंत्र कर सोनाखान के जमींदार को गिरफ्तार करने के लिए मुल्की घुड़सवारी की एक टुकड़ी भेज दी थी और थोड़ी बहुत परेशानी के बाद संबलपुर में उन्हें 24 अक्टूबर, 1856 को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया। वस्तुतः नारायण सिंह की राजनैतिक चेतना एवं जागरुकता ब्रितानी अधिकारियों को चुनौती थी।

सोनाखान के किसान अपने नेता को जेल में देख बेचैन थे, दुखी थे किंतु उनके पास कोई चारा नहीं था। उसी समय देश में अँग्रेजी सत्ता के विरोध में विप्लव की अग्नि फूट पड़ी। इसका लाभ उठाकर सोनाखान के किसानों ने संभवतः संबलपुर के विद्रोही नेता एवं क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय से संपर्क किया और उनकी मदद से नारायण सिंह ने रायपुर जेल से निकलने की योजना बनाई। दस माह चार दिन बंदी रहने के बाद नारायण सिंह तीन अन्य साथियों के साथ जेल से निकले। वे जेल से निकलकर सीधे सोनाखान चले गए और तीन माह तक स्वतंत्र घूमते रहे। रायपुर के डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें पुनः पकड़वाने हेतु 1000 रुपए का इनाम घोषित करवाया साथ ही उसने तुरंत एक दस्ते को सोनाखान की ओर भेज दिया परन्तु ब्रिटिश सरकार उन्हें खोजने या बंदी बनाने में असमर्थ रही।

जब नारायण सिंह गाँव पहुंच गए तो गाँव–गाँव के आदिवासी अपने नेता को देखकर खुशी–खुशी दृढ़ निश्चय कर संगठित हुए, विद्रोह का नगाड़ा गाँव–गाँव बजने लगा।

नारायण सिंह भली–भाँति जानते थे कि अँग्रेज सरकार उन्हें बख्शेगी नहीं और जल्दी–से–जल्दी गिरफ्तार करने के लिए पूरी ताकत लगा देगी और ऐसा हुआ भी। नारायण सिंह ने परिणामों की तनिक भी परवाह किए बिना अँग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद जारी रखा। जमींदार नारायण सिंह के साहसिक कार्यों ने जनहित कार्यों में संलग्न होकर अंग्रेजों का विरोध अकेले ही हिम्मत के साथ किया। सोनाखान पहुँचकर नारायण सिंह ने 500 बंदूकधारियों की एक सेना एकत्र करने में सफलता पाई। उन्होनें हथियार एवं गोला बारूद बड़ी मात्रा में एकत्र किए और सोनाखान पहुँचने वाले प्रत्येक रास्ते पर जबर्दस्त मोर्चाबंदी कर दी।

रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को नारायण सिंह के जेल से निकलने और सोनाखान पहुँचने का समाचार जब से मिला था उसकी नींद हराम हो गई थी। रायपुर में अँग्रेजों की फौज थी परन्तु इलियट को उस पर पूर्ण विश्वास नहीं था। यह रायपुर स्थित फौज के प्रति अविश्वास का ही परिणाम था कि नारायण सिंह के विरुद्ध कार्यवाही करने में इसलिए इलियट को पूरे 20 दिन लग गए। जनहित में वीर नारायण सिंह का संघर्ष अँग्रेजों से प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व उन्होंने किया। अँग्रेजों ने इसे विद्रोह माना था। जिले के अव्यवस्थित प्रशासन के कारण विद्रोह के लिए उपयुक्त अवसर था। सोनाखान गाँव को खाली करा दिया गया। पास की पहाड़ी में मोर्चा बंदी की गई। सोनाखान की ओर आने वाले हर रास्ते पर नाकेबंदी करवाकर मजबूत दीवारें खड़ी करवा दी गई। निकट के गाँवों से रसद, शस्त्र, गोला–बारूद आदि इकट्ठे किए और साहस के साथ मोर्चा संभाला।

उन्होंने अँग्रेजों के विरुद्ध खुली बगावत का ऐलान कर दिया था। उनकी गिरफ्तारी अँग्रेज डिप्टी कमिश्नर के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी थी तो नारायण सिंह के लिए आत्म–सम्मान और देश की सुरक्षा व आजादी की बात बन गई थी। लैफ्टीनेंट ग्रांट के नेतृत्व में पैदल एवं घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी बिलासपुर से रवाना हुई जो रायपुर जिले के उत्तरी क्षेत्र तथा नर्मदा क्षेत्र के रामगढ़ एवं सोहागपुर क्षेत्र में क्रांतिकारियों की गतिविधियों को रोकने हेतु भेजी गई।

वीर नारायण सिंह के नेतृत्व में सोनाखान गाँव के आसपास के सभी किसान संगठित हो गए तथा उन्होंने शपथ ली कि वे उनके नेतृत्व में अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार हैं। वस्तुतः यह छत्तीसगढ़ का पहला किसान संगठन था और वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम किसान नेता थे। किसानों में चेतना फैलाकर, उनकी शक्ति को संगठित कर अत्याचारी शासन से लोहा लेने का कार्य प्रथमतः वीर नारायण सिंह ने ही किया। उनकी सेना में किसान भी भर्ती हुए किंतु उनके पास न तो पर्याप्त हथियार थे और न ही कोई सैनिक प्रशिक्षण, किंतु उनके पास अटूट मनोबल था और था स्वाधीनता के लिए संघर्ष का संकल्प। अत्याचार, अन्याय से लड़ने की प्रेरणा थी। अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता। देखते–ही–देखते सोनाखान गाँव एक फौजी छावनी में बदल गया। जंगल के बीच बसे इस आदिवासी गाँव में तीरकमानों एवं बंदूकों की झनकार सुनाई पड़ने लगी। स्वाधीनता के संघर्ष की पहली शंखनाद सोनाखान के जंगलों से ही उठी थी।

इसी बीच अंग्रेजों के नेतृत्वकर्ता स्मिथ को मंगल नामक व्यक्ति से सूचना मिली कि समयाभाव के कारण नारायण सिंह नाकेबंदी का कार्य पूर्ण नहीं कर सका है तथा अवरोध हेतु खड़ी दीवार अपूर्ण है। स्मिथ ने अपने अधीनस्थ जमींदारों के कतिपय सहायकों को घाटी की पूर्ण नाकेबंदी हेतु आदेशित किया तथा 80 सैनिक और नियुक्त किए।

स्मिथ को अपनी फौजी तैयारी में रायपुर में 20 दिन एवं खरौद में 8 दिन लगे थे। स्मिथ खरौद से रवाना होकर पहले नीमतल्ला, फिर देवरी पहुँचा। यह 30 नवम्बर 1857 की बात है। देवरी जमींदार, स्मिथ के स्वागत के लिए तैयार ही बैठा था। देवरी का जमींदार रिश्ते में नारायण सिंह का काका लगता था। उसकी नारायण सिंह से खानदानी शत्रुता थी। स्मिथ ने देवरी जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया।

देवरी से स्मिथ ने ऐसी व्यवस्था की कि नारायण सिंह को सोनाखान में बाहर कहीं से भी कोई सहायता न मिल सकें। सोनाखान जंगलों एवं पहाड़ों से घिरा एक किले के समान है। सोनाखान की ओर प्रवेश के सारे रास्तों को अवरुद्ध कर स्मिथ एक दिसम्बर 1857 को प्रातःकाल देवरी से सोनाखान पर आक्रमण करने हेतु रवाना हुआ। आक्रमण के समय देवरी जमींदार महाराज साय और शिवरीनारायण का बालापुजारी भी साथ थे। देवरी जमींदार स्मिथ की फौज का पथ प्रदर्शन कर रहा था। स्मिथ की फौज जब सोनाखान से तीन फर्लांग दूर रह गई थी तब एक नाला पड़ा। उस समय 10 बजा होगा। नारायण सिंह के सिपाहियों ने स्मिथ की सेना पर अकस्मात् हमला कर दिया। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया। तोप एवं बंदूकों से हमले प्रारंभ हो गए। स्मिथ लिखता है ''किंतु हम आगे बढ़ते रहे तथा सुरक्षित रूप से दोपहर तक सोनाखान पहुँच गए।'' हरिठाकुर का मत है कि प्रारंभ में 10 बजे स्मिथ को प्रथम आक्रमण के समय भारी नुकसान हुआ था परंतु ठीक समय पर सैन्य मदद मिल जाने से वे आगे बढ़ते ही चले गए। नारायण सिंह के सिपाही इस बाढ़ को रोकने में असमर्थ रहे। अतः नारायण सिंह जंगलों की ओर चले गए ताकि अवसर मिलते ही पुनः आक्रमण कर सके। स्मिथ ने लिखा है कि ''हम शीघ्रता से पैदल ही नारायण सिंह के घर तक गए, यह भी अन्य गाँवों की तरह रिक्त था। हमने वहाँ गोली चालन किया और उसके घर से पहाड़ियों तक पहरा लगवा दिया किंतु पहाड़ियों पर तब तक हमला न करने का दृढ़ संकल्प किया था जब तक कि कटंगी से लोग सहायता के लिए न आ जाएँ ताकि दोनों ओर से उन पर हमला किया जा सके।'' पहाड़ी के ऊपर से भीषण गोलाबारी कर नारायण सिंह ने स्मिथ को एक बारगी लौटने पर विवश कर दिया। तत्पश्चात् खाली ग्राम में स्मिथ ने आग लगा दी। गाँव के लोग पहाड़ी पर से यह दृश्य देख रहे थे। जंगल के दूसरी ओर से नारायण सिंह की सेना ने गोलियों की बौछार शुरू की। इसके फलस्वरुप स्मिथ को अपनी

जान बचाने हेतु गोलियों की पहुँच से दूर गाँव से हटने को बाध्य होना पड़ा। रात्रि में स्मिथ ने व्यक्तियों का लगातार आगमन देखा। जलते हुए सोनाखान ग्राम के उस पार पहाड़ियों में हलचल देखते हुए स्मिथ की वह रात्रि बेचैनी में व्यतीत हुई। स्मिथ लिखता है कि वह रात अँधेरी थी किंतु हमें चन्द्रमा के प्रकाश तथा हमारे सामने धधकते हुए ग्राम से लाभ हुआ।

सोनाखान धू–धू कर जल रहा था। नारायण सिंह ने स्मिथ से रणक्षेत्र में मुकाबले की तैयारी तो की थी किंतु इस प्रकार के अग्निकांड की कल्पना उन्होंने नहीं की थी। सुबह तक नारायण सिंह ने देखा कि सोनाखान राख के ढेर में बदल चुका है।

नारायण सिंह के आंदोलन को अँग्रेजों ने कुछ स्थानीय लोगों की ही मदद से कुचल दिया था। स्मिथ ने नारायण सिंह के साथ कोई शर्त नहीं रखी। वह सोनाखान के जमींदार के साथ 3 दिसंबर को रायपुर की ओर वापस चल दिया तथा 5 दिसम्बर को रायपुर पहुँचा। नारायण सिंह को उसने रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट को सौंप दिया एवं स्मिथ ने संबलपुर एक पत्र लिखकर निवेदन किया कि गोविंद सिंह को रायपुर भेजें क्योंकि उस समय वह उस जिले में था। उसने व्यक्ति भेजकर यह निर्देश दिया कि व्यवस्था हेतु जमींदारी में नई नियुक्तियाँ की जाएँ। तथा नारायण सिंह द्वारा बनाई गई सेना को रद्द कर दिया जाए।

डिप्टी कमिश्नर इलियट लिखता है– ''मेरे कोर्ट के समक्ष जमींदार को पेश किया गया और उस पर 1857 के अधिनियम के सेक्शन 6 एक्ट 14 के अंतर्गत अभियोग लगाया गया। 1857 की धारा 01 और अधिनियम 11 के तहत मैंने उसे फाँसी की सजा सुना दी।'' 9 दिसंबर 1857 को इलियट ने रायपुर स्थित तीसरा भारतीय पैदल सेना के कमांडर को सूचित किया – ''उसे कल उषाकाल में फाँसी पर लटकाया जाएगा अतः निवेदन है आप इस कार्यवाही को देखने और जरूरत पड़ी तो व्यवस्था बनाए रखने के लिए आपकी कमान में जो रेजीमेंट है उसकी जेल के निकट परेड कराएँ।'' (अनु. शम्भू दयाल गुरू) 10 दिसम्बर 1857 की सुबह सजा तामील कर दी गई। छत्तीसगढ़ के प्रेरणा प्रतीक शहीदवीर नारायण सिंह अमर हो गए।

वीर नारायण सिंह को फाँसी देने के कुकृत्य से जनता में आतंक के स्थान पर आक्रोश व्याप्त हुआ। रायपुर की जनता एवं सैनिकों के समक्ष दी गई फाँसी की घटना ने अल्पकाल हेतु ब्रिटिश आतंक का भय प्रदर्शित किया किंतु कालांतर में यह प्रेरणा के रूप में 18 जनवरी 1858 के विद्रोह के अवसर पर दृष्टिगत हुई जिसका नेतृत्व वीर हनुमान सिंह राजपूत ने किया था। विद्रोह के बाद 17 लोगों को गिरफ्तार कर अँग्रेजों ने 22 जनवरी 1858 को सार्वजनिक फाँसी दी जिसमें सभी जाति एवं धर्म के लोग थे। शहीद नारायण सिंह का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। आजादी की लड़ाई में वे छत्तीसगढ़ के प्रेरणास्त्रोत रहे। वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ में 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में राजनीतिक सामाजिक संचेतना के संवाहक थे।

इस प्रकार देश की स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेते हुए छत्तीसगढ़ के वीर सेनानी शहीद हो गए। हमारे लिए गौरव की बात है कि छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता के लिए पहला बलिदान देने वाला एक आदिवासी वीर था जिसने यह सिद्ध कर दिया कि स्वाधीनता की अग्नि इस क्षेत्र के आदिवासियों के हृदय में भी बराबर धधक रही थी। जेल के कैदियों एवं जनता ने भी 10 दिसम्बर 1857 को मातम मनाया तथा वीर साथी को श्रद्धांजलि अर्पित की। छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम की यह चिरस्मरणीय घटना है। वीर नारायण सिंह के वंशज व क्षेत्र की जनता आज भी सोनाखान जाकर श्रद्धासुमन अर्पित करती है। नारायण सिंह की वीरगाथा घर–घर में व्याप्त है। गर्व के साथ जनता वीर नारायण सिहं को यह कहकर याद करती है –

वीर नारायण तुम्हारी वीरता बलिदान से ।
आग के शोले निकलते अब भी सोनाखान से ।।
शहीदों व सेनानियों के बलिदानी गौरव का प्रतीक।
देश में तिरंगा ध्वज फहर रहा है, बड़ी शान से ।।

शब्दार्थ

साक्षी – गवाह; **विप्लव** – क्रांति, विद्रोह; **परवाह** – चिंता; **रसद** – सैनिकों की खाद्य सामग्री; **किला** – दुर्ग; **रणक्षेत्र** – युद्धभूमि; **फौज** – सेना; **कुकृत्य** – बुरा कार्य; **रणक्षेत्र** – युद्ध क्षेत्र; **कालांतर** – समय पश्चात्; **क्षोभ** – क्रोध जनित दुःख; **अकस्मात्** – अचानक; **नाकेबंदी** – घेराबंदी।

अभ्यास

पाठ से

1. वीर नारायण सिंह में कौन से मानवीय मूल्य दिखते हैं, जो उन्हें अद्वितीय सिद्ध करते हैं।
2. वीर नारायण सिंह को अपने पूर्वजों से कौन से गुण प्राप्त हुए थे?
3. जमींदार होने के बाद भी, शहीद वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के क्या कारण थे?
4. माखन व्यापारी के गोदाम से अनाज निकालने के पीछे जमींदार का क्या उद्देश्य था?
5. शहीद वीर नारायण सिंह निर्भीक, दृढ चरित्र और ईमानदार थे। यह किस घटना से पता चलता है?
6. वीर नारायण सिंह की विद्रोह की रणनीति क्यों असफल हुई?
7. छत्तीसगढ़ की जनता के बीच वीर नारायण सिंह की लोकप्रियता के कारण क्या हैं?

पाठ से आगे

F69NF4

1. अपने आस–पास के ऐसे लोगों की जानकारी एकत्र करें जो जनसेवा के कार्य में निस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं?
2. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में वीर नारायण सिंह के अलावा छत्तीसगढ़ की माटी के और कौन–कौन से वीर सपूत शामिल थे जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर किए? उनके बारे में जानकारी एकत्र कर उनकी जीवन–यात्रा पर साथियों के साथ समूह चर्चा करें?
3. आदिवासी जीवन सरल, निर्भीक और प्रकृति के सबसे करीब है? इस संदर्भ में उनके गुणों के पाँच उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए?

4. ''अटूट मनोबल से बड़ा कोई हथियार नहीं होता'' इसे आपने अपने जीवन में कई बार महसूस किया होगा। अपने जीवन के उन प्रसंगों को लिखकर कक्षा में सुनाइए?

F6IJGR

भाषा के बारे में

1. (क) उन पर मुकदमा चलाया गया।

(ख) स्मिथ ने देवरी के जमींदार को हथियार की तरह उपयोग किया।

पाठ से लिए गए इन दोनों वाक्यों में फर्क यह है कि 'क' एक कर्मक वाक्य है अर्थात् इस प्रकार के वाक्य में क्रिया पर 'क्या' प्रश्न का जवाब 'निर्जीव संज्ञा' (मुकदमा) के रूप में प्राप्त होता है। जैसे– क्या चलाया गया? उत्तर– मुकदमा चलाया गया।

जबकि 'ख' वाक्य द्विकर्मक वाक्य है। देवरी के 'जमींदार' और 'हथियार' इस वाक्य में दो कर्मों का प्रयोग हुआ है। एक कर्म अर्थात निर्जीव संज्ञा (हथियार) और दूसरा कर्म अर्थात किसको/किसे के उत्तर में सजीव संज्ञा (जमींदार) का प्रयोग हुआ है।

आप इसी प्रकार के पाँच–पाँच वाक्यों की रचना कीजिए।

2.

- मनः + बल = मनोबल — तमः गुण = तमोगुण
- मनः + भाव = मनोभाव — तपः वन = तपोवन
- अधः + भाग = अधोभाग — रजः गुण = रजोगुण
- वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध — मनः अनुकूल = मनोनुकूल

उदाहरण से स्पष्ट है कि विसर्ग (:) से पूर्व 'अ' हो और विसर्ग (:) के पश्चात 'अ', या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, या पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण खोजकर उनका संधि विच्छेद कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छतीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम के कौन–कौन से स्थान विद्रोह के मुख्य केंद्र थे? उन स्थानों का नाम लिखकर नेतृत्वकर्ता का नाम लिखिए।

2. छत्तीसगढ़ के नक्शे में उन स्थानों को चिन्हित करें जो 1857 में आन्दोलन के केंद्र रहे। इस दौरान उन स्थानों पर हुई गतिविधिओं की संक्षिप्त जानकारी भी दीजिए।

F6SFIE

F72BK2

पाठ – 4.2

गृह–प्रवेश

सतीश जायसवाल

जीवन परिचय

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार सतीश जायसवाल का जन्म 17 जून 1942 को हुआ। उन्हें रिपोर्ताज, कविता, कहानी तथा विशेषतः संस्मरण और यात्रावृत्तांत लेखन के लिए जाना जाता है। बख्शी सृजनपीठ छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष रह चुके सतीश जी को पत्रकारिता का द स्टेट्समैन अवार्ड फॉर रूरल रिपोर्टिंग (लगातार दो बार) तथा बनमाली कथा सम्मान प्राप्त है। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं –

कहानी संकलन :– जाने किस बंदरगाह पर, धूप ताप , कहाँ से कहाँ, नदी नहा रही थी। बाल साहित्य :– भले घर का लड़का, हाथियों का गुस्सा, संपादन :– छत्तीसगढ़ के शताधिक कवियों का प्रतिनिधि संकलन– कविता छत्तीसगढ़। संस्मरण – कील काँटे कमन्द। वर्तमान में आप बिलासपुर छ.ग. में निवासरत हैं।

सतीश जायसवाल की कविता गृह प्रवेश में एकाकी जीवन जी रहे व्यक्ति को अपने एकांत के सन्नाटे को तोड़ने का उपक्रम करते दिखाया गया है। कविता में ऊपरी दिखावे से भरा प्रेम, थके हारे व्यक्ति की व्यथा, एकाकीपन में जीवन का ठहराव तथा पक्षियों के प्रति प्रेम और अंत में सपनों में ही सही 'घर का 'घर' हो जाना' चित्रित हुआ है। कविता इन अनुभवों से गुजरते हुए पाठक को संवेदना से जोड़े रखती है।

गृह–प्रवेश

पहले लटकाई मैंने
धान की बालियों वाली झालर
दरवाजे की चौखट पर
फिर भेजा चिड़ियों को न्योता
गृह प्रवेश का विधिवत।

चिड़ियों ने भी
न्योते को मान दिया,

आईं, दाना चुगा।
और लौट गईं
बाहर ही बाहर दरवाजे से
वैसे
समारोह के बाद जैसे
लौटते हैं
आमंत्रित अतिथि सभी।

छूट गया घर
सूने का सूना,
पहले से भी वीराना
किसी रंग बिरंगे
और उमंग भरे
मेले से लौटने पर
एक आदमी जैसे।
थका हारा और बिलकुल अकेला।

तब लटकाया मैंने एक आईना
भीतर
अंतःपुर की दीवार पर।

आईने के काँच में झाँका
तो एक से दो हुआ,
संतोष हुआ।
अपनी ही छाया ने समझाया
सूनापन कुछ तो दूर हुआ।
ऐसे ही
नींद में
सपनों का साथ जुड़ जाएगा
धीरे–धीरे घर भी
घर हो जाएगा।

सपने में
आवाज दे रही थी
चिड़िया,
जगा रही थी
सुबह सबेरे।
आईने पर खटखट
जैसे खटखटा रही थी
घर का दरवाजा।

किसी अतिथि की तरह
बाहर ही बाहर से
नहीं लौटी इस बार
चिड़िया,

अब अंतःपुर में
चिड़िया
काँच के आईने में
अपने को निहारती
शृंगार करती
और एक घर सजाती।

घर
धीरे–धीरे घर बन रहा था।

सतीश जायसवाल

अभ्यास

पाठ से

1. कवि चिड़ियों को बुलाने के लिए क्या–क्या करता है?
2. चिड़ियों के दाना चुगकर लौट जाने पर कवि कैसा महसूस करता है?
3. सूनापन दूर करने के लिए कवि कौन–कौन से उपाय करता है?
4. कवि द्वारा घर के आंतरिक भाग अथवा अंत:पुर में आईना लटकाने का आशय क्या है?
5. 'घर धीरे–धीरे घर बन रहा था', यह पंक्ति घर में किन बदलावों और उम्मीदों की ओर संकेत करती है?
6. कविता में अतिथियों और चिड़ियों में क्या समानताएँ बताई गई हैं?

पाठ से आगे

1. आप पक्षियों को अपने घर आमंत्रित करने के लिए किस प्रकार का उपाय करना चाहेंगे? लिखिए।
2. आईने में अपना बिंब देखने के बाद आपके मन में किस–किस तरह के विचार आते हैं? उन विचारों को लिखिए।

F7B7LP

3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. किसी विवाह या उत्सव के आयोजन के बाद जो दृश्य आप देखते हैं और आपके मन में जो भाव उभरते हैं उनका वर्णन कीजिए।
5. गृह प्रवेश के बारे में आप क्या जानते हैं? कविता में वर्णित गृह प्रवेश का दृश्य, परंपरागत रूप से समाज में होने वाले गृह प्रवेश से किस प्रकार भिन्न है?

भाषा के बारे में

1. 'बालियाँ' शब्द से दो वाक्य इस प्रकार बनाइए कि इस शब्द के अलग–अलग अर्थ प्रकट हों।
2. गृह प्रवेश, न्योता, झालर, उमंग, मेला, उत्सव, वीराना, रंग–बिरंगे, शृंगार, चौखट, अतिथि, सपना और संतोष इन 12 शब्दों का प्रयोग करते हुए एक प्रसंग–वर्णन या लघु कहानी लिखिए।

F7K3NC

3. कविता से 10 विशेषण शब्दों की पहचान कर उन्हें अलग कर लिखिए। आप उन विशेषण शब्दों के लिए कौन से विशेष्य शब्द लिखना चाहेंगे, आपके द्वारा कल्पित विशेष्य शब्दों से उन विशेषणों को मिलाकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. आप अपने आस–पास अकेले रह रहे किसी बुजुर्ग महिला या पुरुष को देखकर लिखिए कि उन्हें किस तरह की मुश्किलों का सामना अपने दैनिक जीवन में करना पड़ता है? सामाजिक रूप से एक संवेदनशील व्यक्ति के रूप में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

2. हर सुबह और शाम चिड़ियों की चहचहाहट से वातावरण में एक तरह का संगीत छिड़ जाता है। इसी तरह की और भी घटनाएँ प्रकृति में होती होंगी। उन घटनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।

3. एक एकाकी व्यक्ति के घर और एक परिवार वाले घर में आप किस प्रकार का फर्क देखते हैं? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

F7TYPZ

पाठ – 4.3

छत्तीसगढ़ की लोककलाएँ

F83URM

दानेश्वर शर्मा

जीवन परिचय

भिलाई इस्पात संयंत्र के पूर्व प्रबंधक, अखिल भारतीय स्तर के साहित्यकार, लोक साहित्य के अधिकारी विद्वान, हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी के यशस्वी कवि, ललित निबंध एवं स्तंभ लेखक, फिल्मी गीतकार, कवि सम्मेलनों के कुशल संचालक तथा श्रीमद् भागवत पुराण के प्रवचनकार श्री दानेश्वर शर्मा जी का जन्म ग्राम मेडेसरा, जिला दुर्ग (छ.ग.) में 10 मई,1931 में हुआ। आपकी प्रकाशित पुस्तकें – छत्तीसगढ़ के लोक गीत (विवेचनात्मक), हर मौसम में छन्द लिखूंगा (गीत संग्रह), लव–कुश (खंडकाव्य), लोक दर्शन (धार्मिक–आध्यात्मिक ललित निबंध संग्रह), तपत कुरू भई तपत कुरू (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह) तथा गीत–अगीत (हिन्दी काव्य संग्रह) हैं।

'शब्दानुशासनम्' में कहा गया है–''लोके वेदे च'' अर्थात् लोक में और वेद में भी। 'लोक' की यह प्रथम प्रतिष्ठा अकारण नहीं है। वह वेद से भी अधिक प्राचीन है। लोक–मानस ने धरती को माता और अपने को उसका बेटा माना है।' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथ्वीव्याः। नाते रिश्तों के इस प्रेम ने उसे प्रकृति और उसकी संतान के साथ जोड दिया और यहीं से फूटी लोक–रचना की अजस्र धारा लोक गीत, लोक गाथा, लोक नाट्य और लोक नृत्य के रूप में आज तक प्रवाहित होती चली आ रही है। मनुष्य का सम्पूर्ण चिंतन, दर्शन और राग–विराग लोक कला में इसी कारण सन्निहित है।

1 नवंबर 2000 से छत्तीसगढ़ स्वतंत्र राज्य है। गढ़ अर्थात किला। यहाँ कभी छत्तीस किले थे। रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, बिलासपुर, रायगढ़, सुकुमा, दंतेवाड़ा, सूरजपुर, बीजापुर आदि 27 जिलों में यह भू–भाग साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में अपनी अनेक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। रायपुर (वर्तमान बलौदाबाजार) जिले के तुरतुरिया नामक स्थान में वाल्मीकि का आश्रम माना गया है। इस नाते, कविता की पहली ऋचा यहाँ फूटी आदि शंकराचार्य के भी गुरु श्री गोविंद पाद स्वामी इसी धरती के संत थे। संगीत और कला के क्षेत्र में भी इसी प्रकार की अनेक बातें कही जाती हैं।

छत्तीसगढ़ लोक–कला का भी गढ़ है। यहाँ खेत–खार, पर्वत नदियाँ, वन–उपवन सब गाते हैं–

गेहूँ गाए गीत खेत में
और बाजरा झूमे नाचे
चना बजाता घुँघरु छन–छन
और मूँग ज्यों कविता बाँचे,
लोक गीत की कड़ी–कड़ी में
जीवन का सरगम सजता है
लोक कला का जादू ऐसा
कदम–कदम बंधन लगता है

लोक कला के इन जादूगरों का लंबा इतिहास है किन्तु आज भी छत्तीसगढ़ में ऐसे सैकड़ों कलाकार हैं जिन्होंने देश के कोने–कोने में ओर विदेशों में भी अपनी छाप रख छोड़ी है। लोक कला के अंतर्गत कुछ प्रतिनिधि लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक नाट्यों एवं लोक नृत्यों की चर्चा संभव है।

झूमते–झुमाते लोक गीत गाए जाते हैं। किसी भी अंचल के लोक गीतों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का आधिपत्य रहता है। छत्तीसगढ़ में भी यही स्थिति है किन्तु जो बात छत्तीसगढ़ी लोक गीतों को अन्य भारतीय लोक गीतों से अधिक विशिष्ट बनाती है, वह है 'धुनों की विविधता'। ददरिया, सुवा, गौरा, भोजली, जँवारा, बिहाव, और भजन प्रमुख लोक गीत हैं।

'ददरिया श्रृंगार गीत है।
संझा के बेरा तरोई फूले रे
तोर चिमटी भर कनिहा तोहीं ल खुले रे

अर्थात शाम के समय तरोई का फूल खिलता है। एक चिमटी में समा जाने वाली तुम्हारी पतली कमर तुम्हारे व्यक्तिव को ओर अधिक निखार देती है।

इस गीत में सवाल–जवाब भी चलता है खेत में या तालाब–नदी के पास में बैठे हुए किसी नायक ने ददरिया का एक पद गा दिया और दूसरी और से भी किसी ने उसका जवाब दे दिया तो स्पर्धा शुरू हो गई। यह सिलसिला काफी लंबा चलता है और आसपास छिटके हुए श्रोता इस प्रतिस्पर्धा का आनंद लेते हैं। लोक कला में आशु–कवित्व भी है और ददरिया उसका उदाहरण है।

'सुआ गीत' में महिलाएँ बाँस की टोकनी में भरे धान के ऊपर 'सुआ' अर्थात तोते की प्रतिमा रख देती हैं और उसके चारों ओर वृत्ताकार स्थिति में नाचती–गाती हैं। 'सुवा' को छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में कबीर के 'हंसा' की तरह आत्मा का प्रतीक माना गया है।

सेमी के मड़ पर कुंदरवा के झूल वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए
एदे धान ए सिया रे मोर

जेही तरी गोरी कूटे धान ए
कहाँ रहिथस तुलसी अउ
कहाँ रहिथस राम वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए
चँवरा रहिथस तुलसी
मंदिर रहिथस राम वो
जेही तरी गोरी कूटे धान ए

श्रीमती अमृता और श्रीमती कुलवंतिन का नाम सुवा गीत की अच्छी गायिकाओं में आता है।

दीपावली के समय कार्तिक अमावस्या की रात को गौरी (पार्वती) की पूजा होती है। गोंड़ जाति की महिलाएँ इस अवसर पर जो गीत गाती हैं, वे 'गौरा गीत' कहलाते हैं। छोटे पदों में किन्तु बड़ी ऊर्जा से भरे इन गीतों में श्रोताओं को भी झुमा देने की ताकत है। रात भर की पूजा अर्चना के बाद प्रातः विसर्जन के समय इन गीतों के भाव में करुणा आ जाती है और देवी को अगले वर्ष फिर आने का निमंत्रण देती हुई महिलाओं की आँखें आँसू से नम हो जाती हैं। ममता चंद्राकर, साधना यादव, अनुराग ठाकुर, कविता वासनिक आदि के स्वर में गौरा गीत बहुत अच्छे लगते हैं।

'जँवारा' भी शक्ति की आराधना हैं । नवरात्रि के पर्व में गेहूँ के उगे हुए अंकुर के माध्यम से शक्ति स्वरूपा प्रकृति पूरे गाँव को बल देती है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक गीत गायक लाला फूलचन्द श्रीवास्तव, भैयालाल हैड़ाउ, बैतल राम साहू, पंचराम मिरझा, केदार यादव, नर्मदा प्रसाद वैष्णव, कोदूराम वर्मा, शिव कुमार तिवारी, शेख हुसैन और प्रकाश देवांगन हैं।

सुग्घर–सुग्घर कथा सुग्घर सुग्घर कहिनी

सुन लेहू भइया, सुन लेहू बहिनी

'लोक–गाथा' बड़ी कहानियां हैं। छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोक–कथाओं में ढोला–मारू, सोन सागर, दसमत कइना, भरथरी, आल्हा, पंडवानी, देवारगीत, बाँसगीत, चँदैनी, लोरिक चंदा आदि प्रमुख है।

लोक गाथा गायिकाओं में इस समय श्रीमती तीजन बाई और श्रीमती सुरूज बाई खांडे के नाम उभर कर आए हैं। सुरूज बाई बिलासपुर की रहने वाली है और ढोला भरथरी तथा चंदैनी गाती हैं। एकल स्वर में भी समाँ बाँध देने वाली यह गायिका अपनी विधा के लिए अगल से पहचानी जाती है। रूस में हुए भारत महोत्सव में भी उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया था ।

लोक–गाथा का विशाल भंडार 'देवार गीत' में मिलता है। देवार एक घुमन्तू जाति है। इसका पूरा परिवार कलाकार होता है। केवल 'रूंजू' (एकतारा) बजाकर ही सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने वाला देवार अपनी शैली और धुन के कारण पहचाना जाता है।

मार दिस पानी, बिछलगे बाट

ठमकत केंवटिन चलिस बाजार

केंवटिन गिरगे माड़ी के भार

केंवट उठाए नगडेना के भार

देवार जाति की महिलाएँ प्रायः गाती और नाचती हैं। नाचने की कला में वे इतनी प्रवीण होती है कि लोक नृत्य में 'देवरनिन नाच' एक विधा हो गई है। देवार जाति के कलाकारों में मनहरण, कौशल, गणेश, बरतनिन बाई, किस्मत बाई, फिदा बाई, पद्मा आदि प्रमुख है।

'पंडवानी' पांडवों की कथा है। झाड़ूराम देवांगन पंडवानी के शीर्षस्थ कलाकार थे। उन्हें मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान प्राप्त था। विदेशों में भी अनेक कार्यक्रम हुए हैं। उनके शिष्यों की बहुत बड़ी संख्या है, जिनमें से पूनाराम निषाद को संगीत अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। श्रीमती तीजनबाई कापालिक शैली की पंडवानी गायिका हैं और उन्हें पद्मभूषण का अलंकरण प्राप्त है। रेवाराम, लक्ष्मी बाई, सामेशास्त्री देवी आदि सिद्ध हस्त पंडवानी गायक, गायिकाओं की श्रेणी में रितु वर्मा भी उभर कर आई है। पंडवानी का एक उदाहरण है –

रथ ला हाँकत हे भगवान

कूकुर लुँहगी, साँप सलगनी

हाथी हदबद, गदहा गदबद

सैना करिस पयान

रथ ला हाँकत हे भगवान

लोक नाट्य का कलेवर, व्यंग्य का तेवर

छत्तीसगढ़ के लोक नाट्य में प्रमुख है – नाचा, चन्दैनी और रहस। 'नाचा' अत्यन्त सशक्त विधा है और लोक प्रिय भी। इसमें पुरुष ही महिला के वेश में 'परी' बनकर गाते और नाचते हैं। दो चार नाच के बाद गम्मत या प्रहसन होता है जिसमें 'जोक्कड़' (जोकर या विदूषक) के अतिरिक्त कुछ अन्य पात्र प्रहसन पेश करते हैं। गम्मत या प्रहसन में अत्यन्त तीखा व्यंग्य होता है किन्तु उसका समापन किसी अच्छे आदर्श को इंगित करता है। नाचा और गम्मत दोनों को मिलाकर 'नाचा' कहा जाता है। नाचा रात भर चलता है और सबेरे 'करमा' के साथ समाप्त होता है। स्व. मँदराजी दाऊ नाचा के बहुत बड़े कलाकार थे। आज से 60 वर्ष पहले बोड़रा, रिंगनी और रवेली की नाचा पार्टी प्रसिद्ध मानी जाती थी। बाद में रिंगनी, रवेली पार्टी एक हो गई। लालूराम और मदन लाल इस पार्टी के सशक्त कलाकार थे जिनके नाम से लोग टूट पड़ते थे । लालू राम ने हबीब तनवीर के निर्देशन में तैयार 'चरणदास चोर' में चरणदास की अविस्मरणीय भूमिका निभाई और विदेशों में भी ख्याति अर्जित की। फिल्म 'मेसी साहब' में उसकी छोटी सी भूमिका भी प्रभावकारी है। नया थियेटर दिल्ली के एक नाट्य में मद्रासी पंडित का जीवंत रोल करने का 'करेंट' ने उसका चित्र छापते हुए टिप्पणी की थी कि Hindi Stage has yet to find lalu Ram अर्थात हिंदी रंग मंच पर अभी लालूराम पैदा नहीं हुआ है। भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा आयोजित भारत प्रसिद्ध 'छत्तीसगढ़ लोक कला महोत्सव' में इस लोक कलाकार का अभिनंदन किया गया था।

मध्यप्रदेश शासन ने लोक नाट्य के पाँच छत्तीसगढ़ी कलाकारों मदन लाल, भुलवाराम, गोबिन्द राम, देवीराम और फिदा बाई को 'तुलसी सम्मान' प्रदान किया था।

'चँदैनी' लोक नाट्य में लोरिक और चंदा की प्रणय गाथा प्रस्तुत की जाती है। वस्तुतः, चंदैनी अब लोक नाट्य की एक ऐसी शैली हो गई है जिसमें कलाकारों की संख्या कम होती है और एक कलाकार अनेक पात्रों का अभिनय कर लेता है। रामाधार, सुखचंद और लतेलराम इस फन में माहिर कलाकार हैं। रामाधार साहू असाधारण प्रतिभा के धनी है और मंच पर इतनी अभिव्यक्तियाँ एक साथ दे देता है कि कभी–कभी बौद्धिक दर्शक भी उसके साथ चलने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

बस्तर का 'भतरानाट' और बिलासपुर का 'रहस' भी लोक नाट्य हैं। 'रहस' वस्तुतः रास है तथा कृष्ण की रासलीला का ही प्रदर्शन है।

लोक नृत्य माँदर की थाप पर थिरकते पाँव

वैसे तो अधिकांश लोक गीत, लोक गाथा और लोक नाट्य में लोक नृत्य का भी थोड़ा बहुत पुट रहता है किन्तु नृत्य प्रधान होने के कारण जिन लोक कथाओं को नोक नृत्य की श्रेणी में रखा जा सकता है, उनमें प्रमुख है– पंथी, रावत, नाच, गेंड़ी, डंडा नाच, देवारिन नाच और आदिवासी नृत्य।

'पंथी' सतनामी संप्रदाय के भक्तों द्वारा अपने गुरु घासीदास तथा उनके बताए सत्य की महिमा को रेखांकित करके गाया जाने वाला भाव–प्रवण नृत्य है–

इतना के बिरिया में कोन देव ला वो

मैं तो बंदत हवँव दीदी, जय सतनाम

मैं तो बंदत हवँव भइया, जय सतनाम

पंथी इतनी तेजी से नाचा जाता है कि पंजाब के भाँगड़ा के समान गिने–चुने लोक नृत्य ही इसकी तुलना में रखे जा सकते हैं। माँदर और झाँझ केवल दो वाद्य इस नृत्य में पूरे वातावरण को झकझोर देते हैं। देवदास की पंथी पार्टी का नाम किसी समय शिखर पर था। बुधारू इस पार्टी का माँदर–वादक है और अपनी कोई सानी नहीं रखता। देवदास की पार्टी ने विदेशों में भी खूब ख्याति अर्जित की। नृत्य की तेज गति से आश्चर्य –चकित होकर विदेशियों ने ध्यान चंद और ज्ञान चंद की हॉकी स्टिक की तरह देवदास के पैरों का भी परीक्षण किया। राधेश्याम, लतमार दास, पुरानिक लाल चेलक और अमृता बाई भी इस विधा के सशक्त कलाकार हैं। देवदास के निधन से पंथी लोक कला की बहुत बड़ी क्षति हुई है।

मुख्यतः मवेशी चराने का पेशा करने वाली राउत जाति का 'राउत नाचा' दीपावली के समय होता है। कुल देवता की आराधना करने के बाद हर रावत अपने घर से 'काछन' निकालता है। उस समय उसके पास अपार शक्ति होती है। मस्ती में अपने घर के ही छप्पर छानी को तोड़ते हुए निकलने वाला रावत अपनी लाठी से समस्त रावतों पर अकेले ही प्रहार करता है। उसके प्रहार को रोकने के लिए लगभग 30–40 राउत वहाँ एकत्र रहते हैं। जब उन्मादी राउत लाठी चलाते–चलाते थक जाता है, तब जमीन में लेट जाता है। देवता को धूप और नारियल भेंट करने के बाद वह स्वस्थ होता है और अपने दल में शामिल होकर घर से बाहर नाचने के लिए निकल जाता है। एक राउत दोहा है–

गोहड़ी चराएँव, बड दुःख पाएँव, मन अब्बड़ झुंझवाय

बरदी चराएँवं बढ़ सुख पाएँव, गंजर के दुहेंव गाय

छत्तीसगढ़ में त्यौहारों का सत्र वर्षा ऋतु में हरेली (हरियाली) से प्रारंभ होता है। हल, कुदाली, फावड़ा आदि कृषि औजारों की पूजा की जाती है। इस अवसर पर 'गेंड़ी' भी बनाई जाती है । लगभग 8 फीट लम्बे बाँस में जमीन से लगभग 3 फीट की ऊँचाई पर बाँस का ही पायदान बनाया जाता है। इस तरह गेंडी तैयार होती है जिस पर चढ़कर नाचा जाता है। गेंड़ी के पायदान को नारियल की रस्सी से बाँधने तथा उसमें मिट्टी तेल डालकर धूप में सुखाने से होने वाली चर्र मर्र की आवाज अन्य वाद्यों के साथ मिलकर अद्‌भुत संगीत पैदा करती है। समूह में नाचने पर गेंड़ी नृत्य की छटा देखने लायक होती है।

'आदिवासी नृत्य' छत्तीसगढ़ की लोक कला का महासागर है। जन जातियों की बहुलता वाले क्षेत्र में सैकड़ों तरह के आदिवासी नृत्य प्रचलित हैं। माँदर की धुन पर नाचने वाले ये आदिवासी अपने खुलेपन के लिए मशहूर हैं। युवक और युवतियाँ समान रूप से अधिकांश नृत्यों में एक साथ नाचते हैं। उनके पैरों का प्रक्षेपण इतना सधा हुआ और संतुलित रहता है कि लगता है किसी ने रस्सी या स्केल से बाँध दिया हो। आदिवासी अंचलों के कुछ नृत्य बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे –

बस्तर में गौर, ककसार, चेहरे, दीवाड़, माओ, डोली और डिटोंग। सरगुजा में सैला, जशपुर में सकल, मानपुर में हुल्की, चोली और माँदरी। देवभोग में लरिया। प्रायः सभी आदिवासी नृत्य किसी सामाजिक या धार्मिक परंपरा का निर्वाह करते हैं। 'करमा' गोंड़ और देवार जाति का प्रमुख नृत्य है किन्तु यह हर आदिवासी अंचल में अलग–अलग शैली में नाचा और गाया जाता है। मूलतः करम राजा और करमा रानी को प्रसन्न करने के लिए जन जाति के लोग करमा नाचते है किन्तु कालांतर में ददरिया के साथ जुड़कर वह श्रृंगारमय भी हो गया। गोलार्ध पर नाचते हुए युवक–युवतियों का दल माँदर की मस्ती में झूम–झूम कर नाचता है और जब अपने साथी के पाँव के अँगूठे को छूने की स्थिति में आ जाता है, तब 'करमा' सिद्ध होता है। एक करमा गीत के बोल हैं–

होइरे होइरे तोला जाना पड़े रे

कटंगी बजार के पीपर तरी रे

दार राँधे, भात राँधे, लिक्कड़ म खोए

चार पइसा के जुगजुगी दुनिया ल मोहे

तोला जाना पड़े रे

हमारी संस्कृति मूलतः लोक संस्कृति है। लोक कला उसका एक अंग है। शरीर की पुष्टि के लिए अंगों का पुष्ट होना अनिवार्य है अतः लोककला की अजरता–अमरता लोकसंस्कृति की अजरता–अमरता है।

शब्दार्थ

मड़वा – मंडप; **माड़ी** – घुटना; **सुग्घर** – सुंदर; **बरदी** – गौ वंशों का झुंड; **गदबद** – तेज गति से दौड़ना; **बिछलगे** – फिसल गए; **पयान** – प्रस्थान; **गौहड़ी** – गौ वंशों का बड़ा समूह जो प्रायः जंगल में रहते हैं; **बगडेना** – बाँह; **झुझवाना** – अप्रसन्न होना; **गिंजरफिर** – घूमकर; **जुगजुगी दुनिया** – जगमगाती दुनिया; **लिक्कड़** – लकड़ी।

अभ्यास

पाठ से

1. मनुष्य का सम्पूर्ण चिंतन, दर्शन और राग विराग लोककला में सन्निहित क्यों है?
2. 'तुरतुरिया' नामक स्थान क्यों प्रसिद्ध है?
3. छत्तीसगढ़ी लोक गीत को अन्य भारतीय लोक गीतों से अधिक विशिष्ट क्यों माना जाता है?
4. छत्तीसगढ़ी के प्रमुख लोक गीत गायकों के नाम लिखिए ।
5. 'नाचा विधा'' को संक्षेप में समझाइए।
6. किन–किन लोक कलाओं को लोक नृत्य की श्रेणी में रखा जा सकता है?
7. आदिवासी अंचलों में प्रसिद्ध नृत्य कौन–कौन से हैं?

पाठ से आगे

1. महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ग्रंथ का नाम लिखकर आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार आश्रमों का उल्लेख कीजिए।
2. शक्ति की आराधना ''जँवारा'' का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
3. आशु कवित्व से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. ''सुआ (गीत)'' नृत्य के समय टोकनी में भरे धान के ऊपर सुआ रखने का क्या अर्थ है?
5. पद्मभूषण तीजनबाई को पंडवानी की ''कापालिक शैली'' की गायिका कहा जाता है। इस शैली का आशय स्पष्ट करते हुए पंडवानी की अन्य शैलियों का उल्लेख कीजिए।
6. हरियाली पर्व के समय कृषि उपकरणों की पूजा अर्चना करने एवं बैगा द्वारा दरवाजे पर नीम की डँगाल खोंचने का आशय क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित श्रुति सम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए–

कला	काला
किला	कीला
पवन	पावन
आशु	आँसू
विधा	विद्या
देवार	देव
प्रतिभा	प्रतिमा
पंथी	पंछी
हंसा	हँसा
गौरी	गोरी

FJH487

2. निम्नांकित शब्द समूहों का प्रयोग पाठ में किन परिस्थितियों में किया गया है–

   आँखें नम होना, केश खोलकर झूमना, परी बन के नाचना, वृत्ताकार स्थिति में नाचना

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के छत्तीस किलों (दुर्ग) के नाम ढूँढ़कर लिखिए।
2. अपने अंचल के लोकगीत या लोकनृत्य का उल्लेख कीजिए।
3. गम्मत में हास्य व्यंग्य के माध्यम से संदेश दिया जाता है। आप अपने आस–पास के लोगों से पूछकर ऐसे किसी प्रसंग का वर्णन कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ी लोक कला को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में 'हबीब तनवीर' के समूह का बड़ा योगदान रहा है। उनकी प्रस्तुति के संबंध में अपने शिक्षक से पूछकर लिखिए।
5. आपके क्षेत्र में दीपावली पर्व किस तरह मनाया जाता है? इस पर एक निबंध लिखिए।
6. राउत नाचा में प्रयुक्त होने वाले कुछ दोहों का संकलन कीजिए।

FJQZ9U